डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 नवम्बर 2012 : मूल्य - पाँच रुपये

मासिक पत्रिका

अजायब • बानी

वर्ष : दसवां | अंक : सातवां | नवम्बर-2012

संपादक
प्रेम प्रकाश छाबड़ा
099 50 55 66 71
098 71 50 19 99

उप संपादक
नन्दनी

अनुवादक
मास्टर प्रताप सिंह

विशेष सलाहकार
गुरमेल सिंह नौरिया
099 28 92 53 04

संपादकीय सहयोगी
सुमन आनन्द,
परमजीत सिंह

5
गुरु कभी नहीं जाता
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

15
आत्मा पवित्र है
(स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस. आश्रम - राजस्थान

34
धन्य अजायब
(मुम्बई में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर, सन्त बानी आश्रम, 16 पी.एस. वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039 जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

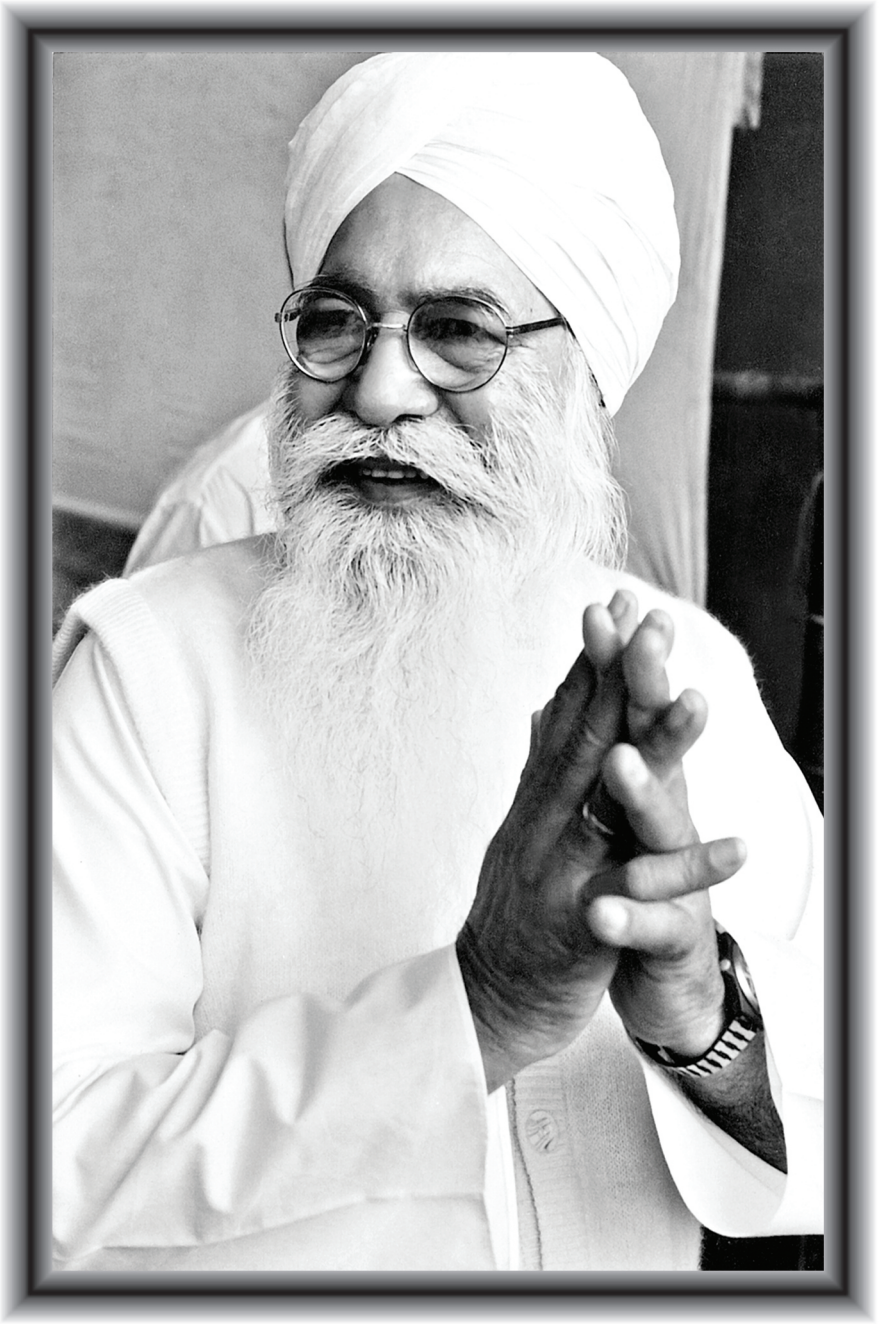

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु कभी नहीं जाता

वारां - भाई गुरदास जी

मुम्बई

मैं सतगुरु सावन-कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने हमें खुले दिल से अपनी याद में बैठने का मौका दिया। भाई गुरदास जी की बानी आपके सामने रखी जा रही है। भाई गुरदास ने ऊँची अवस्था प्राप्त करने के बाद भी गुरु सिक्खी बनाए रखी और आप आत्माओं को गुरु के साथ जोड़ने का काम करते रहे।

जब तक गुरु शरीर में होता है तब तक शिष्य को खुशी, शान्ति और मस्ती मिलती रहती है लेकिन गुरु के जाने के बाद शिष्य को शान्ति नहीं मिलती। जो शिष्य अंदर जाते हैं जिन्होंने सच्चाई और गुरु की महानता को देखा होता है वे सतगुरु के शारीरिक रूप से चले जाने के बाद बहुत दर्द महसूस करते हैं।

जो भजन करते हैं अंदर जाते हैं उन्होंने गुरु की महानता और सच्चाई को देखा होता है वे सदा यही कामना और प्रार्थना करते हैं कि सतगुरु के जीवन का एक दिन हजारों सालों का बन जाए ताकि वे लाखों सालों तक सतगुरु के दर्शन कर सकें। वे सोचते हैं कि गुरु के बिना एक क्षण जीना भी अभिशाप है। जब ऐसे सेवक का गुरु चोला छोड़ देता है तो वह इस सदमें में होता है कि उसने क्या गुनाह किया जो उसे गुरु के बिना रहना पड़ रहा है।

जो भजन नहीं करते जिनकी आंतरिक मंडलो पर चढ़ाई नहीं होती, वे गुरु के स्थूल मंडल से जाने के समय का इंतजार करते हैं ताकि वे उसके स्थान पर गुरु बन सकें।

गुरु नानक साहब ने अपने बाद अंगद को कार्य करने के लिए बहुत मुश्किल से राजी किया। गुरु नानक देव जी ने चोला छोड़ने के बहुत समय पहले अंगद को अपने गाँव जाकर भजन-अभ्यास करने के लिए कहा क्योंकि गुरु नानक साहब जानते थे कि अंगद को कड़ी खिलाफत का सामना करना पड़ेगा। गुरु नानक साहब के चोला छोड़ने के बाद गुरु नानकदेव जी के बच्चों ने गुरु अंगददेव की निन्दा करनी शुरू कर दी।

आप जानते हैं कि प्रेम सदा सच्चे उत्तराधिकारी की तलाश करता है। जब प्रेमी गुरु अंगददेव के पास गए उस समय गुरु नानकदेव जी के बच्चे अंगददेव की निन्दा कर रहे थे। अंगददेव जी ने निन्दा का उत्तर देने की बजाय यही कहाः

जिसु पिआरे सो नेहु तिस अग्गे मर चलिए।
धृग जीवन संसार ता के पाछे जीवणा।।

जब बाबा सावन सिंह जी ने कृपाल सिंह जी को कार्य करने का हुक्म दिया उस समय कृपाल सिंह जी रो रहे थे। जब देह का बिछोड़ा हुआ तो कृपाल सिंह जी उसे बर्दाशत नहीं कर सके और आप सब कुछ छोड़कर ऋषिकेश के जंगलो में चले गए। जो प्रेमी संगत के भले के लिए महाराज कृपाल को लाने के लिए गए थे केवल वे ही जानते हैं कि महाराज कृपाल को वापिस लाने के लिए राजी करना कितना कठिन था।

मैंने आपको बताया है कि एक बार महाराज कृपाल सिंह जी ने मुझे अपने साथ कार में बैठने के लिए कहा। मैं ऐसा नहीं करना चाहता था क्योंकि महाराज कृपाल बहुत थके हुए थे और मैं चाहता था कि आप कार में आराम से जाएं। गंगानगर से करणपुर का रास्ता काफी लम्बा था। आपने मेरा हाथ पकड़ा और अपनी कार में

बिठा लिया। रास्ते में आपने मुझे बताया कि किस तरह बाबा सावन सिंह ने आपको कार्य सौंपा था। आपने मुझे उस समय के हालात बताए तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि आप मुझे यह सब क्यों बता रहे हैं? मुझे ऐसा लगा कि मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक जाएगी। मैं चाहता था कि मैं कार से बाहर कूद जाऊँ।

महाराज कृपाल सिंह जी ने बताया कि बाबा सावन सिंह जी ने मुझसे कहा, ''देखो कृपालसिंह! इस संसार में जुबानी ज्ञान देने वाले बहुत होंगे अगर तुम यह कार्य नहीं करोगे तो क्या होगा?'' उस समय महाराज कृपाल सिंह जी ने कहा, ''मैंने कुछ नहीं कहा और बाबा सावन सिंह जी के आगे सिर झुका दिया आपने मुझे जो हुक्म दिया मैंने वह हुक्म स्वीकार कर लिया।''

महाराज कृपाल सिंह जी हमेशा बाबा सावन सिंह जी से प्रार्थना किया करते थे कि आपका साया सदा बना रहे और आप प्रेमियों की संभाल करते रहें। एक दिन आपके प्यार को देखते हुए बाबा सावन सिंह जी ने आपको बुलाया और अपने साथ भजन में बैठने के लिए कहा। महाराज कृपाल सिंह जी ने देखा कि पहले के सभी सन्त और गुरु वहाँ इकट्ठे थे। वे सब इस बात पर विचार-विमर्श कर रहे थे कि बाबा सावन सिंह जी को संसार में कुछ दिन और रहने दिया जाए या नहीं? सभी सन्त आपको कुछ दिन संसार में रखने के लिए सहमत हो गए लेकिन बाबा जयमल सिंह जी ने कहा कि संसार के वर्तमान हालात ऐसे हैं कि सावन सिंह जी को वहाँ नहीं रखा जा सकता उसे वापिस बुलाना चाहिए।

जब महाराज कृपाल अभ्यास से उठे तो बाबा सावन सिंह जी ने आपसे पूछा, ''अब तो तुमने देख लिया कि बाबा जी ने मेरे लिए क्या फैसला किया है?'' तब कृपाल सिंह जी कुछ नहीं बोल सके।

बाबा सावन सिंह जी एक औरत की बात बताया करते थे कि वह एक गुरु के पास जाया करती थी। उस औरत ने गुरु से बेटा होने का आशीर्वाद माँगा। गुरु ने कहा, ''मैं तुम्हें यह तावीज़ देता हूँ इसमें यह ताकत है।'' उस औरत ने बड़े ही विश्वास से वह तावीज़ ले लिया। समय होने पर उसके पाँच बेटे हुए। जब उसके बेटे बड़े हो गए तो एक दिन औरत ने सोचा! तावीज खोलकर तो देखूँ कि इसमें क्या है?

जब उसने तावीज़ खोलकर देखा तो उस तावीज़ में जो लिखा हुआ था उसका कोई अर्थ नहीं निकलता था। उसमें लिखा था, ''*छिंज पई दरबार धरे की फुल्लियाँ।*'' जब उसने यह पढ़ा तो उसका गुरु और तावीज़ से विश्वास खत्म हो गया। उसने गुरु के पास जाकर कहा कि आपने यह क्या लिखकर दिया है? गुरु ने कहा, ''*अच्छा फिर फुल्लियाँ फुल्लियाँ न फुल्लियाँ ते न सही।*'' उस औरत के सारे बेटे मर गए। गुरु ने कहा, ''यह सब ध्यान और विश्वास की बात है इसलिए नामदान देना तवज्जो देना है। यह गुरु के विश्वास और तवज्जो का खेल है।''

जिस तरह बाबा सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल सिंह जी को कार्य करने का हुक्म दिया उसी तरह महाराज कृपाल ने भी मुझे कार्य करने का हुक्म दिया। उस समय मैंने आपसे विनती की, ''महाराज जी! मैं बड़ा कमजोर आदमी हूँ। मैं यह काम कैसे कर सकूँगा? आप परिपूर्ण हैं, सर्वशक्तिमान हैं फिर भी आपका विरोध हुआ। मैं आपके मुकाबले क्या हूँ? मैं तो बहुत गरीब और कमजोर आदमी हूँ।'' महाराज कृपाल सिंह जी ने कहा, ''मेरी शिक्षाएं गुम नहीं होनी चाहिए। जैसे बुरा बुराई नहीं छोड़ता भला भलाई क्यों छोड़े? तुम्हें यह काम करना ही पड़ेगा।''

जब मैं पहली यात्रा पर सन्तबानी आश्रम अमेरिका गया। एक पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ आए। दोनों बच्चे बड़े मासूम और प्यारे थे। एक बच्चे ने मेरे अच्छे स्वास्थ्य की कामना की और दूसरे बच्चे ने मुझसे यह प्रश्न पूछा, ''क्या आप गुरु बनकर खुश हैं?'' यह सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए।

आप जानते हैं कि इस संसार में आने से पहले मैंने लोगों से यही कहा कि कोई मुझे गुरु न कहे। मुझे उसी नाम से पुकारें जिस नाम से महाराज कृपाल पुकारा करते थे। मेरे कहने का भाव है कि जब किसी का गुरु चोला छोड़ देता है और वह भजन-अभ्यास करता है अंदर जाता है उसने अपने गुरु को अंदर देखा होता है तो गुरु के बाद उसके लिए जीवन बिताना बहुत कठिन हो जाता है।

गुरु अर्जुनदेव जी के दरबार में राय बलवन्त और सत्ताधुम नामक दो आदमी राग-रागनियाँ गाया करते थे उन्हें अपनी बेटियों की शादी के लिए पैसा चाहिए था। उनके ऊपर मन का असर था वे अपनी बेटियों की शादी शानदार तरीके से करना चाहते थे ताकि लोग उनकी बड़ाई करें कि देखो! ये गुरु अर्जुनदेव के सिक्ख हैं इसलिए उन्होंने गुरु अर्जुनदेव से पैसों की माँग की।

जब वे दोनों गुरु अर्जुनदेव जी के पास गए तो अर्जुनदेव जी ने हर सिक्ख से एक टका इकट्ठा करने के लिए कहा ताकि उनके पास काफी मात्रा में धन इकट्ठा हो जाए लेकिन उन्हें डर था कि गुरु अर्जुनदेव जो धन देंगे वह शादी के लिए काफी नहीं होगा। वे लोग नहीं समझे इसलिए उन्होंने यह स्वीकार नहीं किया। अगले दिन गुरु अर्जुनदेव ने एक टका गुरु नानकदेव जी का, एक टका गुरु अंगददेव जी का, एक टका गुरु अमरदेव जी का, एक टका गुरु राम रामदास जी का और आधा टका खुद का लिया। इस

तरह साढ़े चार टके देकर उन दोनों से कहा, ''गुरु नानकदेव, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदेव, गुरु रामदास जी पूरे सिक्ख थे इसलिए उनका एक-एक टका लेकिन मैं आधा सिक्ख हूँ इसलिए मेरा आधा टका।'' जब गुरु अर्जुनदेव जी ने उन दोनों को साढ़े चार टके दिए तो वे नाराज हो गए और उन्होंने राग गाना बंद कर दिया।

आपको यह कहानी बताने का मेरा मतलब यह है कि गुरु अर्जुनदेव जी ने सच्चखंड पहुँचकर, भजन-अभ्यास करके पूर्ण होते हुए भी अपने आपको पूर्ण सिक्ख होने का दावा नहीं किया। बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''सिक्खी का अर्थ है धैर्य रखना।'' कबीर साहब कहते हैंः

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर।
चढ़ गया तो अमर फल गिर गया तो चकनाचूर।।

अगर आप इस मार्ग में मैं-मैं करते हैं तो आपको कुछ प्राप्त नहीं होगा। यह मार्ग तूँ-तूँ कहने का है। हजरत बाहू कहते हैंः

जीवंदया मर रहणा होवे, तां देस फकीरां बहिये हू।
जे कोई सुट्टे गुद्दड़ कूड़ा, वांग अरूड़ी रहिये हू।
जे कोई देवे गालां मेहणे, उस नूं जी जी कहिये हू।

सभी सन्तों ने अपने विरोधियों के लिए सदा यही प्रार्थना की, ''हे प्रभु! इन्हें माफ करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये अपना कितना बुरा कर्म बना रहे हैं।''

भाई गुरदास जी को कई गुरु गद्दियों का फेर-बदल देखना पड़ा लेकिन आप सदा गुरु के छोटे से सिक्ख बनकर रहे और आपने इसी में खुशी प्राप्त की।

गुरमुखि पैर सकारथे गुरमुखि मारगि चाल चलंदे।

भाई गुरदास जी कहते हैं कि गुरु के चरण पूजा के योग्य हैं। जिस रास्ते पर गुरुमुख चलते हैं वह रास्ता भी पूजा के लायक हैं। गुरुमुख जहाँ से गुजरते हैं, जहाँ सतसंग करने जाते हैं; वे अपने गुरु के लिए और गुरु के नाम के लिए ही जाते हैं।

गुरुमुख का मन पवित्र और शुद्ध होता है। गुरुमुख कभी मन या शरीर को अपवित्र नहीं करता। गुरुमुख ने अपना दिल 'शब्द' को टिकाने के लिए बनाया होता है और जो शब्द उसके अंदर बैठा होता है वह सुख-समृद्धि और दया के लिए होता है। गुरुमुख का मतलब गुरु का मुख बन जाना है। गुरु आपके अंदर बैठा हुआ है वह जो कुछ बुलवाता है आप वही बोलते हैं। आप गुरु की बड़ाई के अलावा कुछ नहीं कहते, आप सदा गुरु को शीश झुकाते हैं।

पिछली रात मैंने सतसंग में कहा था कि जब हम तीसरे तिल पर पहुँचते हैं वहाँ ध्यान टिकाते हैं अंदर जाते हैं तो 'शब्द' की रफ्तार गोली से भी तेज होती है अगर हम तीसरे तिल पर पहुँच जाएं तो शब्द का संदेश प्राप्त करने में जरा भी समय नहीं लगता।

गुरु दुआरै जानि चलि साध संगति चलि जाइ बहंदे।

आप कहते हैं कि गुरुमुख सदा गुरु के दरबार में जाते हैं और वहाँ गुरु की सेवा करते हैं। वे लोगों के लिए सेवा का जीवित उदाहरण बनते हैं। ऐसे विरले ही होते हैं जो गुरु की सच्ची सेवा करते हैं बाकी लोग सांसारिक बातों में ही लगे रहते हैं।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि गुरु की सेवा करना बड़ा ही कठिन है। लाखों में किसी गुरुमुख को ही यह मौका मिलता है, वे ही गुरु की सेवा के शानदार मिसाल होते हैं।

धावन परउपकार नो गुरसिखा नू खोजि लहंदे।

वे गुरु भाईयों को खोजते हैं चाहे वे दूर रहते हों या पास रहते हों। वे सबको इकट्ठा करके उन्हें बताते हैं कि प्यारेयो! **गुरु कभी नहीं जाता**। हमने अपने गुरु के दिए हुए काम को करना है। आपने भजन में पढ़ा है कि गुरुमुख सदा ही विनती करते हैं, ''हे प्रभु! गुरु से दूर हो रही संगत की रक्षा करना।''

दुविधा पंथ न धावनी माइया विच उदास रहंदे।

गुरुमुख दुविधा में नहीं पड़ते अगर परमात्मा या गुरु ने आप पर दया करके आपको कोई धन-पदार्थ दिया होता है तो उसमें आपको कोई आनन्द या सुख नहीं मिलता लेकिन आप सदा उदास रहते हैं क्योंकि आपका काम भजन-सिमरन करना है।

प्यारेयो! जब हमारा गुरु चोला छोड़ देता है तो हम दुविधा में पड़ जाते हैं, भजन करना छोड़ देते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि गुरु चला गया है। यह प्यार नहीं, **गुरु कभी नहीं जाता**। चाहे गुरु आपको नाम देते ही चोला छोड़ जाए तो भी वह आपसे दूर नहीं जाता; वह सदा रहता है।

वंदि खलासी बंदगी विरले केई हुकमी बंदे।

महाराज कृपाल सिंह सदा कहा करते थे, ''सच्चाई का कभी नाश नहीं होता। जंगल में सारे कमजोर जानवर नहीं होते। जंगल में शेर और चीते भी रहते हैं।'' आपके कहने का मतलब यह था कि संगत में सारे ऐसे नहीं होते जो भजन नहीं करते। संगत में ऐसे भी प्रेमी होते हैं जो भजन करते हैं और ऊँची अवस्था में पहुँचते हैं।

इस ग्रुप में कई प्रेमी अच्छा अभ्यास करने वाले हैं। आज सुबह एक प्रेमी ने अभ्यास का सुंदर तजुर्बा बताया। जिसे सुनकर

मुझे बड़ी खुशी हुई। हर आदमी का अपना नजरिया होता है। कुछ लोग मुझे अपनी दुनियावी समस्यों के बारे में बताते हैं और कुछ अपने अभ्यास की तरक्की के बारे में बताते हैं। ऐसे प्रेमी प्रोग्राम में आने से पहले तैयारी करके आते हैं। वे अभ्यास में तरक्की करते हैं क्योंकि उनका यहाँ आने का यही मकसद होता है।

गुर सिखा परदखणों पैरी पै रहरासि करंदे।
गुर चेले परचै परचंदे।।

गुरुमुख दीनता धारण किए रखता है। वह जब अपने गुरु के शिष्यों से मिलता है तो ऐसे खुश होता है जैसे गुलाब खिल जाता है। वह दूसरे प्रेमियों के साथ अभ्यास में बैठकर खुश होता है।

जब मैं पहली यात्रा पर गया तो उस समय प्रेमियों की ऐसी दशा थी कि एक प्रेमी ने मेरे पास आकर कहा कि वह किसी के यहाँ गया था वहाँ उसे उसमें कृपाल नज़र आया। उसने मुझे बताया कि मेरे अंदर वह कृपाल नहीं देख रहा। मैंने उससे कहा, ''यह तुम्हारी ग्रहणशक्ति और बर्तन पर निर्भर करता है। मैं तो तुम्हारे अंदर भी कृपाल को देख रहा हूँ। मुझे ऐसा कोई नजर नहीं आता जहाँ कृपाल नहीं है।'' उसे इस बात से गहरा सदमा लगा। उसने अपनी ग्रहणशक्ति को बढ़ाया; मैं अब भी उस प्रेमी से मिलता हूँ अब वह संतुष्ट है।

***

सन्त हमें सिमरन की प्रेक्टिस इसलिए करवाते हैं कि अंत समय में हमारे मुँह से गुरु का दिया हुआ सिमरन निकले और गुरु का तस्सवुर आँखों के सामने हो।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

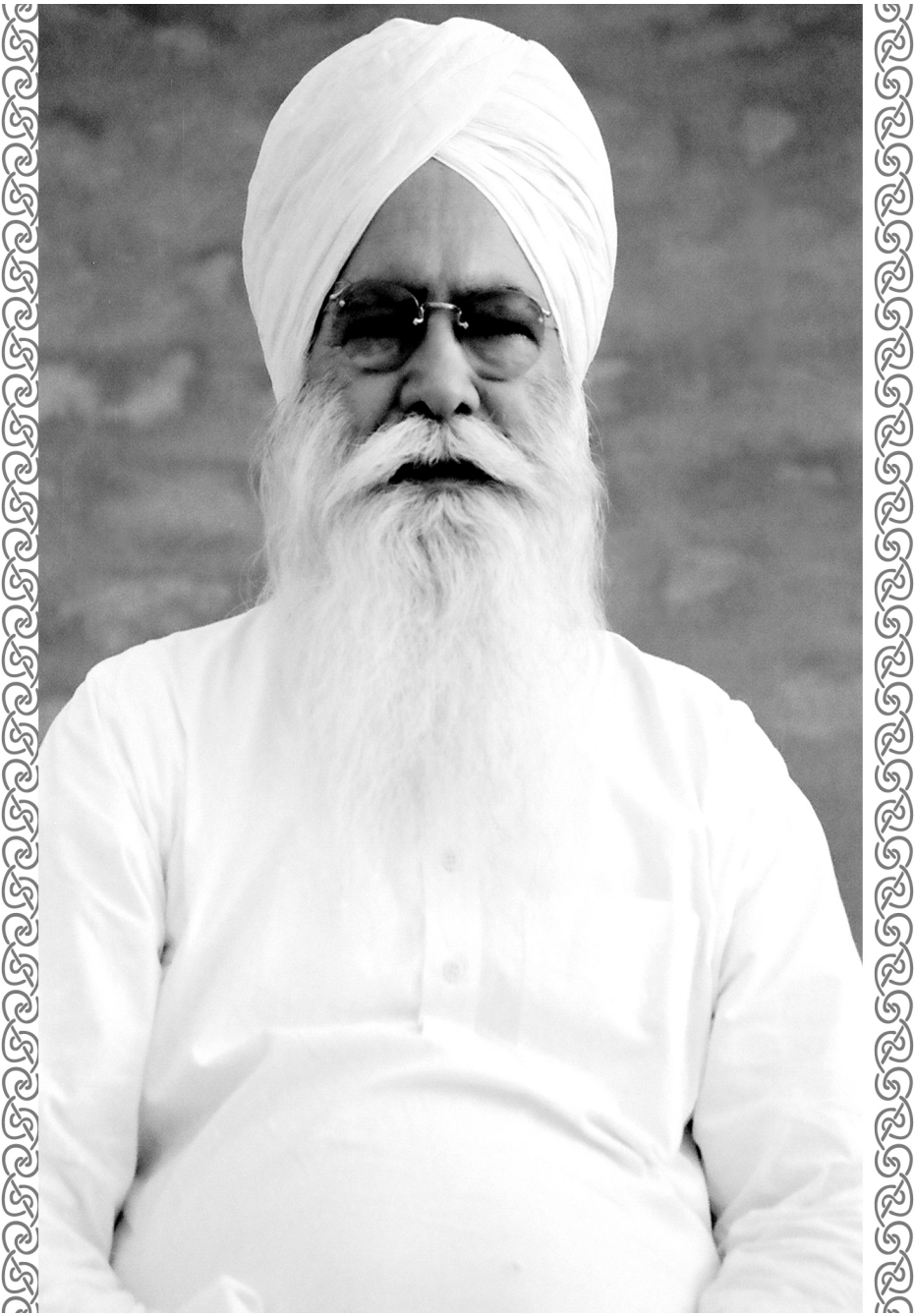

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आत्मा पवित्र है

स्वामी जी महाराज की बानी

16 पी.एस आश्रम, राजस्थान

परमपिता सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारी गरीब आत्मा पर रहम करके अपना यश करने का मौका दिया है। हमारी आत्मा परमपिता परमात्मा की अंश है। परमात्मा पवित्र है; हमारी आत्मा परमात्मा की बूँद है यह भी पवित्र है।

जब गर्मी पड़ती है तो समुद्र का पानी भाप बनकर उड़ता है और बादलों के रूप में जमीन पर बरसता है। यह पानी जमीन पर आकर गंद का साथ लेकर गंदा हो जाता है अगर कई दिनों तक पानी एक ही जगह खड़ा रहे तो उसमें से बदबू आने लगती है लेकिन जब उसी पानी को सूरज की तपिश मिलती है तो वह भाप बनकर उड़ता है और बादलों में जाकर समा जाता है फिर उसे पता लगता है कि यह बदबू और गंद कोई और चीज़ है मैं कोई और चीज़ हूँ; मैं पहले भी पवित्र था और अब भी पवित्र हूँ।

इसी तरह हमारी **आत्मा पवित्र है** लेकिन मन का साथ लेकर मैली हो गई है। मन ने इन्द्रियों का साथ लिया हुआ है, इन्द्रियों ने भोगों का साथ लिया हुआ है। भोगों में फँसकर न इन्द्रियों को शान्ति है और न ही इनके मालिक मन को शान्ति है।

पिछले जमाने में राजाओं के राज्य में उनके मंत्री काम में हाथ बँटवाया करते थे। जिस राजा के मंत्री वफादार होते थे उनका राजकाज सही ढ़ग से चलता था। जिस राजा के मंत्री अपने मालिक के कायदे-कानून का पालन नहीं करते थे वहाँ की प्रजा का कोई कारोबार सही ढ़ग से नहीं चलता था और प्रजा में शान्ति नहीं रहती थी इसी तरह हमारे मन की भी यही हालत है।

हमारी नानी, दादी कहानी सुनाया करती थी कि एक राजा था। जब वह राजा बुजुर्ग हुआ तो उसने अपने प्यारे बेटे को बुलाकर कहा कि बेटा! मैंने राज्य का बहुत आनन्द भोग लिया है, अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ; मेरा आखिरी समय आ गया है। मैं एकान्त में जाकर भजन-सिमरन करना चाहता हूँ। राजा ने अपने राज्य का सारा कार्य अपने बेटे को समझा दिया कि तूने इस ढंग से राज्य का कार्य चलाना है इस तरह के कानून बनाने है और एक दिशा में जाने के लिए पाबंदी लगा दी कि तुमने उस दिशा में नहीं जाना है।

नौजवान यही सोचते हैं कि हमारे बुजुर्ग हमारे ऊपर पाबंदी लगाते हैं शायद उन्हें समझ नहीं। अभी पिता घर से चला ही था उसके रथ की लकीरें अभी मिटी भी नहीं थी लेकिन राजा ने जिस तरफ जाने के लिए मना किया था बेटा उसी तरफ चल पड़ा।

इसी तरह हमारा मन भी उस शहजादे की तरह ब्रह्म के हुक्म को छोड़कर काल का हुक्म मानने लग जाता है। इसने **पवित्र आत्मा** को अपना मंत्री बनाकर काम करना था लेकिन काल को अपना मित्र बना लिया। काल ने इसे इन्द्रियों के बस में कर दिया फिर एक-एक इन्द्री जहाँ भी चाहती है इसे खींचकर ले जाती है। गुरु नानकदेव जी ने मन को नारद का दर्जा दिया हैः

नारद नच्चे कल का पाओ।

नारद को ब्रह्मा का श्राप मिला हुआ है। नारद तो शायद कभी एक-आध घड़ी टिक ही जाता होगा लेकिन मन तो नारद से भी ज्यादा श्रापित है। मन न सोते हुए, न जागते हुए और न ही अभ्यास में बैठे हुए टिकता है। मन जागते हुए दौड़ता रहता है और सोते हुए भी गंदे-गंदे स्वपनों में ले जाता है।

सन्त हमें प्यार से कहते हैं कि जिस तरह एक छोटा बच्चा है उसे समझ नहीं, जब बच्चा आग की चिंगारी को देखता है तो वह उसे पकड़ने के लिए दौड़ता है। माता-पिता उसे समझाते हैं कि तेरा हाथ जल जाएगा लेकिन बच्चे को इतनी समझ नहीं होती कि माता- पिता उसे अच्छी दलीलें दे रहे हैं जोकि उसके फायदे के लिए हैं। बच्चे को समझाने का एक ही तरीका है कि आप उसे उससे भी ज्यादा चमकती हुई चीज़ दे दें तो बच्चा अपने आप ही उस तरफ से हट जाएगा। इसी तरह अगर आपने बड़ी लकीर को छोटा करना है तो आप उस लकीर के बराबर एक बड़ी लकीर खींच दें।

सन्त हमें प्यार से समझाते हैं कि यह मन न तो पढ़-पढ़ाई से वश में आता है, न धूनियाँ तपाने से वश में आता है, न जलधारे करने से और न ही लम्बे-चौड़े भाषण देने से वश में आता है अगर यह सब करने से मन वश में आता होता तो सन्तों को इतना अभ्यास करने की क्या जरूरत थी? हम धर्मग्रन्थों के पाठ करते हैं, तीर्थयात्रा भी करते हैं। ज्ञानी लोग यहाँ बैठे हुए ही उन बगीचों की सैर करते हैं वे उस जगह पहुँच नहीं सकते; वे अपने घर में ही बैठे रह जाते हैं। जो उनके शिष्य बनते हैं वे भी वहीं खड़े रह जाते हैं लेकिन महात्माओं ने अपनी आँखों से देखकर लिखा हैं।

आप विशिष्ट पुराण पढ़कर देखें! रामचन्द्र जी के गुरु विशिष्ट जी ने रामचन्द्र जी को शिक्षा देते हुए कहा, ''यह मन किसी भी साधन से वश में नहीं आता अगर संसार में कोई यह कहे कि मैंने हिमालय पर्वत अपने हाथ में उठा लिया है! बेशक यह मानने वाली बात नहीं फिर भी दो मिनट के लिए मान लेते हैं कि शायद परमात्मा ने कोई इतना शक्तिशाली आदमी पैदा कर दिया है। अगर कोई यह कहे कि किसी ने सारा समुद्र पी लिया है! यह भी मानने वाली

बात नहीं फिर भी मान लेते हैं कि भगवान के घर में कोई घाटा नहीं अगर कोई यह कहे कि मैंने मन को वश में कर लिया है तो हम यह मानने के लिए तैयार नहीं। इसका मतलब यह भी नहीं कि आज तक किसी ने मन को वश में नहीं किया।''

जैसा मैंने पहले बताया है अगर आप बच्चे को अग्नि से हटाना चाहते है तो आप कोई चमकती हुई चीज़ बच्चे के हाथ में दे दें बच्चे का ख्याल अपने आप उस तरफ से हट जाएगा।

हमारा मन लज्जत का आशिक है। जिस तरह बादशाह ने अपने शहजादे पर पाबंदी लगाई थी कि बेटा इस दिशा की तरफ नहीं जाना उसी तरह मन ने पाबंदी लगाई हुई है कि नौं द्वारों से ऊपर नहीं जाना। नौं द्वारों के स्वाद मनमोहक है, मन उन्हीं रसों में लगा हुआ है। कदम-कदम पर परेशानियाँ हैं और मौत हमारा इंतजार कर रही है फिर भी इस बावँरे मन को समझ नहीं आती कि मैं दसवें द्वार पर पहुचूँ! कबीर साहब कहते हैंः

हाथ दीप कुँए पड़े काहे की कुसलात।

रास्ते में कुँ आ है, इंसान सुजाखा है तो वह देख लेगा कि आगे कुँआ है अगर वह अन्धा है तो किसी की मदद से बच जाएगा अगर वह अन्धा और बहरा भी है तो उसे कौन समझाएगा? हाथ में दीपक है फिर भी कुंए में गिरे तो कुशलता कैसे होगी? गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

ऐह मन अन्धा बोला।

यह मन अन्धा भी है और बहरा भी है। अन्धा इसलिए है कि इसके हाथ में दीपक है। वेद-शास्त्र दीपक का काम करते हैं। वेद-शास्त्र कहते हैं कि बुरे काम का बुरा नतीजा होगा। चौरासी लाख

योनियों का जिक्र आता है अगर 'नाम' नहीं जपेंगे तो बहुत सजाऐं मिलेंगी लेकिन हम सब कुछ पढ़कर भी समझते नहीं।

हम दिन-रात जो पढ़ते हैं हमें उस पर अमल करना चाहिए कि महापुरुषों के ग्रन्थ हमें क्या कहते हैं? मन हमारी आत्मा पर मैल चढ़ा रहा है। **आत्मा पवित्र** है यह जब से अपने घर से आई है यहाँ आकर दुःखों से घिरी हुई है।

हमारे मन की ऐसी हालत है जैसे कोई पागल कैदी अपने साथियों से कहकर आता है कि मेरा सामान इसी जगह पर संभाल कर रखना मैं फिर आऊँगा। हमारा मन भी धर्मराज से कहता है कि मेरे लिए योनि तैयार रखना मैं इसी में आऊँगा।

स्वामी जी महाराज इस शब्द में हमें समझाते हैं कि जब हमारी आत्मा इस संसार में आई इसके ऊपर कर्मों का बोझ नहीं था। हम जैसे-जैसे लम्बा सफर करते रहे रास्ता और बढ़ता गया। हम इसके ऊपर कर्मों की मैल उतारने की बजाए और चढ़ाते गए। स्वामी जी महाराज का शब्द गौर से सुनेंः

कुमतिया बैरन पीछे पड़ी, मैं कैसे हटाऊँ जान।।

आप कहते हैं कि इस बाँवरे मन को दुनियां की तरफ से हटाने का एक ही तरीका 'शब्द-नाम' और महात्मा की संगत है।

हम सब संगत में आते हैं फिर भी हमारा काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार कम नहीं हुआ। जब यहाँ ग्रुप आता है तो मैं उन्हें बताता हूँ, ''प्यारेयो! आपमें ऐसे भी प्रेमी है जो अपने मन को समझाते हैं अभ्यास में ऊँचे से ऊँचा तजुर्बा बताते हैं तो दिल खुश हो जाता है। कुछ ऐसे भी हैं जो जैसे आते हैं वैसे ही चले जाते हैं। दो-चार कोकडू मोठ भी होते हैं।''

मैं सबको एक जैसा सतसंग सुनाता हूँ, एक जैसी ही तवज्जो देता हूँ लेकिन जिनकी गृहण शक्ति होती है जो अपने घर से तैयार होकर आते हैं वे फायदा उठा लेते हैं। मैं सबसे कहता हूँ कि आप हिन्दुस्तान आने से एक साल पहले ही तैयारी करें अगर आपका बर्तन साफ होगा तो महात्मा की तरफ से कोई देर नहीं होती। महात्मा कहते हैं कि आओ और गृहण शक्ति बनाओ।

महाराज सावन सिंह जी ने पैंतालीस साल होका दिया। महाराज कृपाल ने पच्चीस साल होका दिया कि देने वाले का कोई मसला नहीं, कोई नाम का ग्राहक बनकर आए! मन के प्याले को खाली करके आएं, दुनिया की ख्वाहिशों को उस प्याले से बाहर निकालकर आएं फिर देखें! वस्तु मिलती है या नहीं? मेरे पास बाहर के देशो से प्रेमी अपने सब कारोबार छोड़कर आते हैं लेकिन हम यहाँ दो घंटे भी काम नहीं छोड़ सकते।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''जिसके दरवाजे पर बैल बंधा हुआ है उसे पता है कि मैंने कब इसे पानी पिलाना है या धूप से छाँव में करना है।'' जो प्रेमी तैयारी करके यहाँ आते हैं उनकी कोई शिकायत नहीं होती, उनका कोई सवाल नहीं होता। वे यहाँ आकर यही कहते हैं, ''घर से बहुत सवाल लेकर चले थे लेकिन यहाँ आकर सब सवाल खत्म हो गए हैं।'' वे एक कान से सुनकर दूसरे कान से नहीं निकालते।

महाराज सावन सिंह जी एक मिसाल देकर समझाया करते थे कि एक सुनार ने सोने की तीन मूर्तियाँ बनाई। तीनों मूर्तियां एक जैसी सुहावनी थी, उनका एक जैसा रूप था और एक जितना वजन था। उन तीनों मूर्तियों को दरबार में लाकर रखा गया और राजा ने सब मंत्रियों से पूछा कि इन तीनों में से कौन-सी मूर्ति

ज्यादा कीमती है? सब वजीरों ने मूर्तियों को तोला, देखा और परखा। बाहर के रंग-रूप में कोई फर्क नहीं था, वजन में भी कोई फर्क नहीं था। सोना भी एक ही था और उन मूर्तियों को बनाने वाला भी एक ही था। उन मूर्तियों में सरसों के दाने जितने बारीक छेद थे जो हर किसी को नजर नहीं आते थे।

समझदार वजीर ने एक मूर्ति के कान में सरसों का दाना डाला तो वह दाना दूसरे कान से बाहर निकल गया। समझदार वजीर ने उस मूर्ति को एक तरफ रख दिया फिर उसने दूसरी मूर्ति के कान में दाना डाला तो वह दाना मुँह के रास्ते बाहर निकल गया। अब उसने तीसरी मूर्ति के कान में सरसों का दाना डाला तो वह दाना मूर्ति के पेट में जाकर समा गया। सब इंसानों को बनाने वाला परमात्मा एक ही है उसने सबके हाथ, कान, नाक एक जैसे ही बनाए हैं लेकिन मनमुख कोकडू मोठ जैसे होते हैं।

सारी दाल पकावे अग्नि, मोठ कोकडू रिझदा ना।

सारी दाल में पानी एक बार ही डाला जाता है और एक जैसी आग पर पकाया जाता है लेकिन कोकडू मोठ दाँत के नीचे आकर सारे मुँह का स्वाद खराब कर देता है। पहली मूर्ति मनमुख जैसी है जो एक कान से बात सुनता है और दूसरे कान से बाहर निकाल देता है। दूसरी मूर्ति उस इंसान जैसी है जो कान से अच्छी बात सुनता है मुँह से निकाल देता है, हजम नहीं करता। तीसरी मूर्ति इस तरह की है कि अच्छी बात कान में आई और पेट में चली गई उसे हज़म कर लिया बाहर नहीं निकाला।

समझदार पिता के पास बहुत धन-पदार्थ है अगर उसका बेटा उस धन को संभालने के लायक न हो तो पिता उसे अपना भेद नहीं देता जबकि वह कमाता तो अपने बेटे के लिए ही है। जब उसका

बेटा संभालने लायक बन जाता है फिर पिता अपना कमाया हुआ धन भी अपने बेटे के हवाले कर देता है।

इसी तरह बहुत से प्रेमी सतसंग में आते हैं लेकिन वे अच्छी बात एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। ऐसे भी प्रेमी हैं जो बहुत प्रेम से सतसंग सुनते हैं लेकिन हजम नहीं करते लेकचरर बन जाते हैं। दूसरे लोग सोचते हैं कि यह बड़ा ज्ञानी है अगर उसने थोड़ा बहुत अभ्यास भी किया होता है तो लोग उसके पाँव छूकर उसकी बड़ाई करके उसे लूट लेते हैं, उसके पल्ले कुछ नहीं रहता; यह ठगों का देश है। ऐसे भी प्रेमी हैं जो अच्छी बात सुनकर उस बात को हजम कर लेते हैं उस पर अमल करते हैं, भजन-अभ्यास करते हैं।

प्यारेयो! मन को समझाने का यही एक तरीका है कि आप इसे 'शब्द-नाम' की कमाई में लगाए।

सतगुरु बचन न माने कब ही उन संग धरे गुमान।।

जब हम इस तरह के लेकचर देना शुरू करते हैं तो लोग हमें मान देकर हमारे पल्ले कुछ नहीं छोड़ते। सतगुरु को अन्दर से सब मालूम होता है क्योंकि वह पर्दापोश होता है। सतगुरु हमें समझाता है लेकिन हम समझने की बजाय सतगुरु से नाराज हो जाते हैं कि हमें इतने लोग मानते हैं लेकिन आप कहते हैं कि हमारे अंदर ये ऐब हैं। अगर किसी को चार दिन सतसंग करने के लिए कह दें तो लोग मान-तान देकर उस बेचारे का हुलिया ही बिगाड़ देते हैं।

मैं कई बार यह कहानी सुनाया करता हूँ कि गंगानगर में मुक्तसर के एक बाबा थे। हमने उनका सतसंग सुनने के लिए एक जगह किराए पर ली। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर

कोई आपसे बीस रूपये (उन दिनों करंसी की कीमत बहुत हुआ करती थी) और रोटी-कपड़ा लेकर सतसंग सुनाए तो भी सस्ता है फिर आप कहते कि जिस महात्मा ने दिन-रात मेहनत की हैं वह अपनी कमाई क्यों बेचेगा? अगर वह पैसे लेकर सतसंग करता है तो अपना रोज़गार चला रहा है, उसके सतसंग का आपके ऊपर कोई असर नहीं होगा क्योंकि वह तो एक भाई की तरह ही हुआ।

हम उस बाबा का आदर-मान करते थे। उन दिनों थोड़े से सतसंगी हुआ करते थे। हम किसी के घर चाय-पानी नहीं पीते थे और न ही किसी को पैर छूने देते थे कि यह हमें लूट लेगा। आपको पता है कि धीरे-धीरे हम लोगों में ढ़ीलापन आ जाता है। कई प्रेमी चाय-पानी पिलाने लग गए। जब सतसंग खत्म हुआ तो घरवालों ने चाय-पानी का इंतजाम किया।

प्रेमियों ने पहले संगत को चाय दे दी। घरवालों ने सोचा कि बाबा जी को अंदर बुलाकर चाय-पानी पिलाएंगे और इनसे कोई बातचीत भी कर लेंगे। गृहस्थी बड़े नरम दिल होते हैं। ये रो भी लेते हैं और पैरों को हाथ भी लगा लेते हैं अगर बाबा कोई भेट-पूजा न लेता हो तो भी ये उसे जबरदस्ती भेट-पूजा दे देते हैं।

बाबा चाय पीने के लिए अंदर नहीं गया। जब बाबा को बाहर ही चाय दी तो उस बाबा ने पगड़ी उतारकर सिर आगे करके कहा, ''मैं बड़ा था, अब चाय मेरे सिर में डाल दो।'' सतसंग में अकाली और गैर सतसंगी लोग भी आए हुए थे। वे सब हँसकर ताली बजाकर चले गए कि जिस मुँह से पहले फूल बरस रहे थे अब उसी मुँह से आग निकल रही है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिसने सतसंग करना है वह सतसंग करने से पहले एक घंटा अभ्यास में बैठे ताकि

उसके अन्दर से प्यार भरे शब्द निकले।'' मैं तो कहता हूँ कि सतसंग से पहले सब मिलकर एक घंटा अभ्यास पर बैठें।

कई सतसंगियों ने महाराज सावन सिंह जी से पूछा अगर हम किसी का अन्न-पानी खाते हैं तो उसका हमारे ऊपर क्या असर होगा? महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''आप इतना सोच लें! किसी का कर्ज माफ नहीं होता।''

गृही का टुक्कर बुरा, नौ-नौ उंगल दांत।
भजन करे तो उबरे, नहीं ता कड्डे आंत।।

अगर साधु किसी का अन्न-पानी खाता है तो उसे पाँच घंटे भजन करना चाहिए तभी कर्ज उतरेगा। कर्ज कमाई करने से उतरता है इसका कोई उपाय नहीं। सोचकर देखें! जो दिन-रात जागता है क्या वह चाय की एक प्याली के लिए अपनी कमाई गँवाएगा? आप किसी का लिहाज न करते हुए कहा करते थे, ''आप जिसका खाते हैं उसका कोई काम कर दें नहीं तो आपको बैल या ऊँट बनकर उसका कर्ज उतारना पड़ेगा।''

अगर सतगुरु हमें चार प्रेमियों को वचन सुनाने के लिए कहते हैं तो हमें अपने ऊँचे भाग्य समझने चाहिए। गुरु ने किसी में बैठकर तो देना ही है, गुरु के अपने तरीके होते हैं। ऐसे सवाल-जवाब अंग्रजों के प्रोग्राम में होते हैं। वे कहते हैं कि बाबाजी जिसे प्रतिनिधि बनाते हैं हमें उसमें से चार्जिंग मिलती है।

ग्रुप लीडर संगत के लिए गुरु से माँगता रहेगा तो उसे मिलता रहेगा अगर वह खुद ही सब कुछ बनकर बैठ जाएगा तो उसे क्या मिलेगा? पॉवर से कनेक्शन कट जाए तो बल्ब रोशनी कैसे देगा, फ्रिज पानी कैसे ठंडा करेगा?

पश्चिम के ग्रुप लीडर अपने आपको ज्यादा भाग्यशाली समझते हैं वे दूसरे प्रेमियों से दो घंटे ज्यादा भजन-अभ्यास करते हैं क्योंकि सिक्खी आसान नहीं होती। अगर अंदर भजन होगा तो नम्रता आएगी, सहनशीलता आएगी। प्रेमी अपनी गलती सुधारेगा अगर भजन नहीं होगा तो गुस्सा ही आएगा।

काम क्रोध की सनी बुद्धि से परखा चाहे उनका ज्ञान।

जो आदमी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार में फँसा है वह सन्तों के ज्ञान को कैसे परख सकता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट होती है तभी वह बुरी हरकतें करता है। क्रोधी आदमी माँ-बाप, भाई-बहन का अपमान करते हुए सोचता भी नहीं। गुरु नानक जी कहते हैं:

तिस पाप दवास न भेंटिए जिन अंदर क्रोध चंडाल।

क्रोध कोई छोटी सी बुराई नहीं। जब आपको यह पता लग जाए कि इस इंसान के अंदर क्रोध साहब बैठे हैं तो आप उसके पास न जाएं। कबीर साहब कहते हैं:

कामी लज्जया न करे मन माही अहलाद।

यही हालत काम की है। कामी आदमी बेशर्म हो जाता है। वह बहन, बेटी की इज्जत नहीं करता, उसे पास खड़ा हुआ इंसान दिखाई नहीं देता। वह मन के पीछे लगकर कर्म करता है।

जिस सन्त ने सारी जिन्दगी भजन-अभ्यास किया है यह भी पता नहीं कि उसने कितने जन्मों में भजन-अभ्यास किया है! सन्त बने बनाए आते हैं। वे हमें डेमोनस्ट्रेशन देते हैं ताकि हम जान सकें कि सन्त सब कुछ होते हुए भी हमारी तरह ही रहते हैं। अगर स्कूल टीचर कहे कि मैं तो पढ़ा हुआ हूँ लेकिन बच्चों को कुछ न

पढ़ाए तो बच्चे कैसे पढ़ेंगे? वह बच्चों को प्यार से पढ़ाता है। इसी तरह जिसने कमाई की है वह भी हमें उत्साह देने के लिए हमारे फायदे के लिए हमारे बराबर बैठता है।

मैं जब पिछली बार अमेरिका गया, वहाँ के जो प्रेमी घर में भजन पर नहीं बैठते वे संगत में आकर बैठते तो थोड़ी देर बाद आँखें खोलकर देखते कि बाकी लोग उठ तो नहीं गए और थोड़ा सा चक्कर लगाकर फिर बैठ जाते थे। अगले दिन मैंने उनसे कहा कि हम आपको छोड़कर नहीं जाएंगे। आपको भजन से उठने के लिए भी कहेंगे और यहाँ एक शब्द भी बोलेंगे। आप कम से कम आँखें तो बंद कर लें। हम सन्तों के ज्ञान को क्या परख लेंगे? तुलसी साहब कहते हैंः

जे कोई कहे सन्त को चीन्हा, तुलसी हाथ कान पे दीन्हा।

सन्त हमारे बीच रहकर हमसे भी छोटा जीवन बिताते हैं। हम उनको कैसे परख सकते हैं? गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

सन्त की महिमा वेद न जाने।

वेद भी दूसरी मंजिल बह्म से आते हैं। सन्त की महिमा परमेश्वर ही जानता है लेकिन हम उनका कहना मानने की बजाए उनकी परख शुरू कर देते हैं।

आप बन्दा बहादुर की कहानी पढ़ते हैं। आप जिला पुन्छ के रजोरी गांव में पैदा हुए। आप छोटी उम्र में शिकार खेल रहे थे, आपने हिरनी मारी जिसके पेट में बच्चा था। आपको बहुत कष्ट हुआ। कई बार छोटी सी बात का दिल पर बहुत असर पड़ता है। आपके अंदर वैराग पैदा हो गया, आप वैरागी साधु बन गए। आपने दक्षिण में जाकर डेरा बना लिया और अभ्यास करने लगे।

जिनकी इतनी चढ़ाई नहीं होती वे अपने आपको कुछ कहलवाते हैं। बन्दा बहादुर का यह काम था अगर कोई आपके पास आता तो पहले आप उसके लिए अच्छा पलंग बिछाते फिर रिद्धी-सिद्धि से उसका पलंग उल्टा देते। बाद में आप लक्ष्मणदास के नाम से मशहूर हुए।

गुरु गोबिंद सिंह जी आखिरी समय में दक्षिण की तरफ गए। वहाँ बन्दा बहादुर का मशहूर डेरा था। बन्दा बहादुर ने गुरु गोबिंद सिंह के साथ भी वैसा ही किया लेकिन उनका पलंग तो क्या उल्टना था बल्कि उसे अंदर से प्रेरणा मिली कि आज समय है। बन्दा बहादुर ने गुरु गोबिंद सिंह के पैरों में गिरकर कहा, ''मैं बिना दाम आपका बन्दा हूँ, जो काम लें दास हाजिर है।''

बन्दा बहादुर को गुरु गोबिंद सिंह पर बहुत श्रद्धा थी। आपको जो काम सौंपा गया आपने वह काम बहुत श्रद्धा से किया और 'शब्द-नाम' की कमाई भी की।

मुझे बाबा बिशनदास जी ने 'दो-शब्द' का भेद देकर प्रेक्टिकल भी करवाया था। ब्रह्म तक पहुँचा हुआ रिद्धी-सिद्धी से काम लेता है मुझे भी यही आदत थी। मैं जिससे आँख मिलाता चाहे कितने भी आदमी मेरे सामने खड़े हो मैं उन्हें उल्टा गिरा देता था।

मैं जब पहली बार लाला परिवार अजीत सिंह के घर गया तो इस परिवार के लोगों को क्या पता था कि मैं क्या कौतुक करता हूँ? ये सब उल्टे होकर गिर गए। बेशक मैंने यह कौतुक इन्हें परमार्थ में लगाने के लिए किया था लेकिन ये कहते कि हमारे उँचे भाग्य हैं कि हमारे घर में बड़े अच्छे सन्त आ गए हैं।

जब परमात्मा कृपाल मेरे घर आए बन्दा बहादुर की तरह मेरे दिल में भी यही कहानी थी। मुझे अपने आप पर बहुत मान था। मुझे उनके खास आदमी से संदेश मिला था कि महाराज जी आने वाले हैं घर पर ही रहना। मेरे दिल में भी यह था कि देखेंगे क्या वह सचमुच महाराज हैं?

जब आप आए मेरे पास जो रिद्धि-सिद्धि थी मैंने सारी रिद्धि-सिद्धि लगा दी लेकिन उस महान गुरु को तो कुछ पता ही नहीं लगा कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैंने आपके पैरों पर गिरकर कहा, ''महाराज जी! मुझे बख्श लें।'' अगर जीव को पहले ही ज्ञान हो जाए कि यह महान गुरु है, मेरी आत्मा का परमात्मा है तो क्या जीव ऐसा करेगा? जिनकी ब्रह्म तक की चढ़ाई नहीं क्या वे गुरु को परख लेंगे? ब्रह्म तक की चढ़ाई करना बहुत मुश्किल है, तीसरे तिल पर टिकना आसान नहीं।

मैं जब आप लोगों को तीसरे तिल पर एकाग्र होने के लिए कहता हूँ तो आप लोग कितना संघर्ष करते हैं, कितने बहाने बनाते हैं कि मन नहीं टिकता, टाँगे दुखती हैं अगर आप तीसरे तिल पर नहीं टिक सकते तो ब्रह्म तक कैसे पहुँचेंगे?

जिन्होंने अपनी जिंदगी में संघर्ष किया होता है वे बताते हैं कि नीचे वाले चक्रो तक ही तकलीफ और संघर्ष है। जब रास्ता आगे चल पड़ता है अंदर रस बढ़ जाता है फिर छोड़ने को दिल नहीं करता। वेद ब्रह्म तक का ही ब्यान करते हैं वेद सन्त की महिमा नहीं जानते। जिन्होंने सिर्फ किताबें ही पढ़ी हैं वे सन्त को क्या परखेंगे?

जहाँगीर की कचहरी में बड़े-बड़े आलिम-फाजिल थे अगर वे सन्त को पहचान सकते तो क्या गुरु अर्जुनदेव जी को इतने कष्ट देते? सन्त को नमस्कार करने में ही हमारा फायदा है।

सन्त का वचन मानने में ही हमारा फायदा है सन्त जो कुछ बोलते हैं हमारे फायदे के लिए ही बोलते हैं अगर आप किसी का भला नहीं कर सकते तो किसी का बुरा भी न करें।

सेवा करे न श्रद्धा लावे, उल्ट करावे उनसे मान।

हम न सन्त की सेवा करते हैं, न उनमें श्रद्धा रखते हैं और चाहते हैं कि वह हमारी सेवा करे। बाबा बिशनदास जी अक्सर मुझे डाँटते और मारा करते थे। एक बार मैं खाना खाकर हाथ धोने के लिए जाने लगा तो आपने मुझसे कहा,, ''मैं तेरे हाथ धुलवा देता हूँ।'' मैंने आपके आगे हाथ कर दिए फिर मैं ही जानता हूँ कि मुझे उनसे कितनी मार पड़ी। हमने गुरु की सेवा करनी है। गुरु पूर्ण बर्तन होता है वह तो हमारी टाँगे भी दबा देगा।

अपनी गत हालत नहीं बूझे कैसे लगे ठिकान।

सन्तमत में आकर सतसंग सुनने का तभी फायदा है कि हम अपनी हालत पर तवज्जो दें और अपनी कमी को दूर करें।

लोभ मोह की सूखी नदियाँ ता में निस दिन रहे भरमान।

लोभ मोह की दोनों नदियाँ खुश्क हैं। जब मौत आती है माँ-बाप, भाई-बहन और जायदादें साथ नहीं जाती। हम जिस लोभ को पूरा करने की खातिर ठग्गियाँ, बेइमानियाँ करते हैं यह सब कुछ हमारे साथ नहीं जाता लेकिन हम फिर भी इनमें मस्त हुए बैठे हैं।

सन्त मता को कैसे बूझे अपनी मत के दे प्रमान।

सन्तमत का मतलब तो यह है कि सन्तों ने हमें सचखण्ड पहुँचने का जो निशान बताया है जब तक हम उस निशान तक नहीं पहुँच जाते तब तक कोई अरमान नहीं। सबसे पहले हुक्म का

मानना है। सन्त 'नामदान' के समय कहते हैं कि मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों का पालन करें इससे आपको बहुत फायदा होगा।

मुझे हुक्म मानने की आदत आर्मी में पड़ी थी। मैंने आर्मी में बहुत कुछ सीखा है। एक दिन गुरमेल सिंह, चौधरी के कमरे के पास खड़ा था, वहाँ इसका मामा मुंशी सिंह भी खड़ा था। गुरमेल ने मुझसे कहा कि यह भी फौजी है। मैंने कहा, ''हाँ, ये जो कुछ फौज में करते थे मैंने उसकी नकल करके दिखाई कि बगल में बच्चा, पेटी बंधी हुई, लम्बे बूट पहने हुए और सिर पर गोबर का टोकरा।'' गुरमेल सिंह ने अपने मामा से पूछा कि क्या ऐसा ही किया था? इसके मामा ने कहा कि ये जो कह रहे हैं सच है। अब कहलाते तो वे भी अपने आपको फौजी ही हैं।

आर्मी में हुक्म मिल जाए कि खाना तैयार करो। वहाँ सवाल नहीं किया जाता कि आग कहाँ से लाएं? राशन कहाँ से लाएं? पहले खाना तैयार करें सवाल बाद में करें।

सन्त हमें नामदान के समय सचखण्ड जाने की थ्योरी समझाते हैं कि गुरु और प्रभु परमात्मा आपके अंदर है। सन्त हमें अकेले अंदर जाने के लिए नहीं कहते लेकिन हमारा फर्ज है कि हम पहले वहाँ पहुँचे सवाल-जवाब बाद में करें। हम कहते हैं कि हमारे घुटने दुखते हैं मन नहीं लगता। अपने आपका सुधार करना ही सन्तमत है। गुरु जो कहता है वह करना ही सन्तमत है।

तिनसे सन्त मौन होए बैठे सो जीव करते अपनी हान।

जो जीव गुस्सा करते हैं ऐसे जीवों के आगे सन्त मौन हो जाते हैं। ऐसे जीव अपना ही नुकसान करते हैं।

कुमति अधीन हुए सब प्राणी क्या क्या उनका करु बखान।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं क्या-क्या बखान करुँ उन पर इतनी मनमत चढ़ जाती है कि वे कमाई भी छोड़ देते हैं।''

जिन पर मेहर पड़े आ शरना वे पावें सतगुरु पहचान।

प्यारेयो! जैसे मैंने मूर्तियों की मिसाल दी थी कि सब जीव एक जैसे नहीं होते। संगत में सूरमा बहादुर भी होते हैं जिनके ऊपर आदि कर्ता परमात्मा की दया होती है वे सच्चे दिल से सन्तों की संगत में आते हैं और अपना उद्धार कर लेते हैं।

अपनी उक्ति चतुरता छोड़े अपने को जाने अन्जान।

जिन जीवों ने पहले चतुराईयाँ की होती हैं जब वे यह सब भूलकर अपने आपको अंजान समझकर सन्तों की शरण में आते हैं तो सन्त उनसे कुछ नहीं छिपाते।

मुझे परमात्मा रूप सावन के चरणों में बैठने का मौका मिला है। मैं महाराज सावन सिंह जी की एक मिसाल बताया करता हूँ कि एक प्रोफेसर आपके चरणों में आया। उसने कहा, ''यह मेरा पहला मौका है कि मैं आपके चरणों में एक शागिर्द बनकर पढ़ने के लिए आया हूँ।'' जो लोग इतना साफ दिल बना लेते हैं गृहण शक्ति बना लेते हैं सन्त तो उन्हें देने के लिए ही आते हैं।

तब सतगुरु प्रसन्न होए कर देवें पता निशान।

गुरु के दो रूप होते हैं एक बाहरी और दूसरा अंतरी। सेवक पुकार करता है कि हे सतगुरु! अगर आप देह नहीं धारते तो मुझे अंदर जाने का रास्ता कौन देता? जब हम गुरु से सच्चा प्यार करते हैं तो सतगुरु दयाल होकर सेवक से कहता है कि तू अंदर आ मैं तेरे पास ही हूँ।

कुमति हटाए छुड़ावे पीछा सुरत लगावे शब्द ध्यान।

जब सेवक गुरु को अंदर प्रकट कर लेता है तो सेवक की ड्यूटी खत्म हो जाती है आगे गुरु की ड्यूटी है। जब बच्चा स्कूल में चला जाता है तो सारी जिम्मेवारी टीचर की होती है फिर गुरु हमें बुरी आदतों में नहीं फँसने देता। वह एक अध्यापक की तरह हमारे साथ ही रहता है।

बिना शब्द उद्धार न होगा सब सन्तन यह किया बखान।

सब सन्त यही कहते हैं कि 'शब्द' के बिना आपकी मुक्ति नहीं हो सकती। 'शब्द' गाने-बजाने वाला नहीं, शब्द एक ताकत है। गुरु अमरदेव जी कहते हैं:

उत्पत्ति शब्दे परले होवे, शब्दे ही फिर उत्पत्ति होवे।

परमात्मा शब्द के जरिए ही दुनियां को पैदा करता है। शब्द के आधार पर इस दुनिया को चला रहा है। जब शब्द को वापिस अपने भंडार में ले लेता है तो दुनियां में धंधुकारा छा जाता है। सब जगह शब्द ही शब्द है। आप इसे नाम कह लें, गुरबानी कह लें, सच्ची बानी कह लें चाहे किसी भी नाम से पुकार लें।

सोई गावे राधास्वामी जो कोई माने सोई सुजान।

राधास्वामी किसी इंसान या किसी मुल्क का नाम नहीं। महात्मा ने प्यार में आकर परमात्मा के नाम रख दिए। किसी ने परमात्मा को अकाल पुरख। किसी ने वाहेगुरु, किसी ने सतनाम कह दिया। जिस तरह रहम करने वाले को रहीम कह दिया, गिरे को उठाने वाले को गिरधारी कह दिया, मुर्दे में जान डालने वाले को मुरारी कह दिया। हमें इन सब नामों की इज्जत करनी चाहिए।

स्वामी जी महाराज का नाम सेठ शिवदयाल सिंह था। आपकी धर्मपत्नी का नाम माता नारायण देवी था। आपने बहुत कमाई की और प्यार में परमात्मा को राधास्वामी कह दिया।

राधा आदि सुरत का नाम स्वामी शब्द वसे निज धाम।
सुरत शब्द दोए राधास्वामी दोने नाम एक कर जानी।

परमात्मा को वही गाता है जिसके ऊपर परमात्मा की दया मेहर होती है; वही दिन-रात परमात्मा की भक्ति करता है। हम जुबान से भी परमात्मा के गुण गाते हैं लेकिन जुबान से गाए गए गुण तोते की तरह है जैसे तोता नर की संगत में रहकर वाहे गुरु! अल्लाह-अल्लाह! करता है लेकिन जब वह बाहर तोतों की संगत में जाता है तो सब कुछ भूलकर अपनी ही बोली बोलता है।

इसी तरह हम संगत में बैठकर रटे हुए शब्द बोलते हैं लेकिन जब मनमुखों की संगत में जाते हैं तो सब कुछ भूलकर वैसे ही हो जाते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

गोबिंद-गोबिंद कहे दिन राती, गुण गोबिंद शब्द सुणावनेया।

गोबिंद-गोबिंद कहने से आप गोबिंद से नहीं मिलेंगे। असली शब्द गुण गोबिंद में जाकर मिलना है। जिस तरह मिश्री पानी में घुलकर पानी का रूप हो जाती है।

हमने सतसंग को श्रृद्धा और प्यार से सुनना है। एक नहीं तो दूसरा सतसंग हमारी गलतियाँ सुधारने में मदद करेगा। हमें महात्मा पर ऐतबार होगा तो हम उनके शब्द को पकड़कर अपनी जिन्दगी बना लेंगे। महात्मा का हर एक शब्द हमारे फायदे के लिए होता है। महात्मा जो भी बोलते हैं हमारे फायदे के लिए ही बोलते हैं।

***

धन्य अजायब

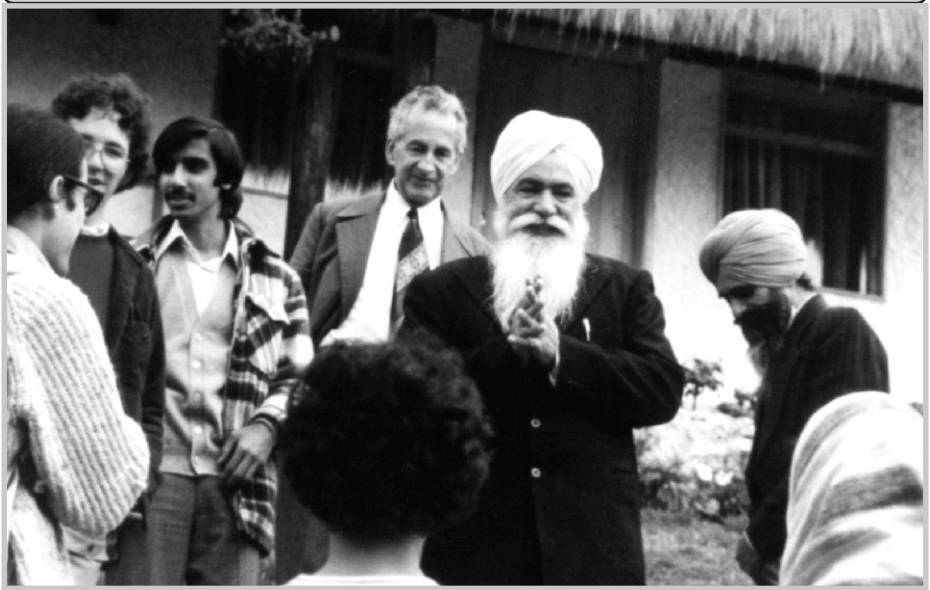

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी मुम्बई में 9 जनवरी से 13 जनवरी 2013 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में नम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुँचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन,
शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)
कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई - 400 067
फोन - 098 33 00 4000